5.

पंचदेव

जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-82-7

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 5

Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

वर्थ डे/09

सजल स्मृति/20

सेहन्ता/30

धोखा/40

एक मुठी घास/46

वर्थ डे

चैत मरनासन होइते बैशाखक आगमन भऽ गेल। ओना, जहिना मासक जन्म भेने मास मरितो अछि आ जनैमतो अछि, तहिना ने मौसमोक मासुपन होइए।

भिनसुरका समय। प्रखर मौसम रहने सूर्यक किरिणोमे प्रखरता आबिए गेल अछि। चौक-चौराहाक दोकान-दौरी जे जाड़क मासमे सिरसिराइत अबेर कऽ खुजै छल ओ जेना-जेना गरमी धबैत गेल तेना-तेना सबेर खुजए लगल, तँए आब चारि बजे सबेरगरेसँ चौकक दोकान खुजए लगैए। ओना, दोकानो-दौरीक अपन-अपन हिसाब अछि। किछु एहेन अछि जेकर गहिंकी चारि बजे भोरेसँ पहुँचए लगै छै आ किछु एहनो अछि जे आठ बजेक पछाइत खुजैए आ किछु एहनो तँ ऐछे जे दस बजेक पछाइत खुजैए।

आने जकाँ जीवन काका सेहो चारि बजे भोरे चौकपर झूठ-साँच समाचारो सुनैले आ खेती-पथारीक गपो-सप्प करैले पहुँचबे करै छैथ। मौसमो अनुकूले रहै छैन। मौसम अनुकूल ई जे जहिना बारह मासक सालमे तीनटा मौसम रहने छहटा रीतु अछि, तहिना ने दिन-रातिक बीच सेहो दूटा मौसम अछि। तैसंग दूटा समरस सेहो अछिए। एकटा भेल राति-दिनक सीमानपर 'भोरक' आ दोसर भेल दिन-रातिक सीमानपर

‘साँझक’। ओना, दुनू मौसमक अपन-अपन गुण सेहो छइहे। जहिना पूर्बा हवा देहक ऊपरमे ठंढा लगैए आ देहक भीतर खौंतियबैए तहिना ने पछबा हवा ऊपरसँ खौंतियबैए आ भीतरसँ ठंढ बनबैए। खाएर ई तँ भेल हवाक बात, साँझ-भोरक अपन हिसाब अछि। जे दुनू दू गतिये चलैए। माने ई जे जखन हवा चलैत रहत, तखन एक रंगक भेल आ जखन हवा ठाढ़ रहत तखन दोसर रंगक भेल। मुदा से नहि, एक तँ शुरूक समय, जे अंगरेजीक बीतैत मार्च आ चढ़ैत अप्रीलक भेल, आ वसन्त रीतुक अधबेसू वसन्त भेल।

चौक-चौराहाक हवा-पानि पीब जीवन काका घरपर एला। ओना माल-जालकेँ सेबेरे घरसँ निकालि बाहरक नादिमे बान्हि खाइ-पीबैले सानी-कुट्टी लगाइए गेल रहैथ, जे खा कऽ मालो-जाल अरामसँ बैस गेल छल।

घरपर अबिते जीवन काका पहिने माल-जाल देखलैन। तीनू मालकेँ बैसल पौज करैत देख चोट्टे घुमि कऽ दरबज्जापर होइत आँगन गेला तँ देखलैन जे दछिनबरिया ओसारपर मन मारि पुतोहु बैसल छेली आ पछबरिया ओसारपर पत्नी दुनू पोती आ दूटा आन अँगनाक स्त्रीगणक संग चुपचाप बैसल छैथ आ मने-मन किछु विचारि रहल छैथ।

दुनू ओसारपर नजैर पड़िते जीवन काका तारतममे पड़ि गेला जे किए सभ एना ठकुआएल बैसल छैथ! अखन तँ भोरक समय छी, दिनक शुरूआतक समय, जे केतेको काज करैक समय छी, तखन किए सभ मन मारि बैसल छैथ? जँ भोरेमे लोकक काज हेरा जाए, माने नइ रहै तखन भरि दिन पानि डेंगोनाइ छोड़ि ओ करत की..?

आँगन-दरबज्जाक बीच मुँहथैरपर ठाढ़ भेल जीवन काका दछिनबरिया ओसारपर बैसल पुतोहुपर नजैर देलैन तँ देखलैन जे पुतोहुक आँखिसँ नोरक बून छिटैक रहल छैन। नोरक बून देख मने-मन सोचए

लगला जे किछु कारण जरूर अछि। मुदा जाबे ओ किछु बजती नहि, ताबे बुझबो केना करब..?

पत्नी दिस नजैर दैत जीवन काका बजला-

“किए सभ हड़ताल केने छी?”

पत्नी तँ ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजलैन। मुदा मिरमिराइत पुतोहुक मुहसँ निकलल-

“रोशनक आइ वर्थ डे... ।”

‘रोशनक वर्थ डे’ सुनि जीवन कक्काक मनमे जोरक धक्का लगलैन। धक्काक कारण भेलैन जे तीन मास पूर्वे रोशन दुनियाँ छोड़ि चुकल छल। माने कल लगक खाधिमे जइमे कलक पानि जमा होइत अछि, ओही खाधिमे खसि रोशन जाड़े कठुआ कऽ प्राणान्त कऽ चुकल छल। शरीरक तँ अन्त भऽ गेलै मुदा जिनगीक अन्त केना मानल जाए। किछुओ दिन तँ घरवास केनहि अछि।

ओना, जहिना आन परिवारमे एक-एक बेकतीकेँ अनेको नाओंसँ पुकारल जाइ छै तहिना जीवनो कक्काक परिवारमे छैन्हे। जीवन काकाकेँ सेहो किछु गोरे ‘जीवन काका’, तँ किछु गारे ‘मन्नु बाबा’ तँ किछु गोरे ‘ब्रह्मानन्द बाबा’ सेहो कहिते छैन तहिना रोशनोकेँ कियो ‘रोशन’ तँ कियो ‘बेल’ तँ कियो ‘बेलबा’ तँ कियो ‘छोटका बौआ’ सेहो कहिते अछि।

पहिल बर्ख पुरलापर रोशनक वर्थ डे धुमधामसँ परिवारमे मनौल गेल छल, आइ दोसर साल छी। ऐ बिच्चेमे रोशन पौने दू बर्खक आयु पुरबैत दुनियाँ छोड़ि देलक।

जहिना गाम समाजक बुढ़-पुरान जीवितकेँ मर्तलोक आ मृत्युकेँ मृत्युलोक बुझबो करै छैथ आ बजबो करै छैथ तहिना जीवन काका सेहो पुतोहु दिस तकैत बजला-

“रोशन स्वर्गक सुख करैए, अपना सभ नर्कमे छी, तखन अनेरे जे

घर-परिवारक काज छोड़ि सभ चिन्तित भेल बैसल छी से अनेरे ने। दिनक जे भावी छल ओ भेल। तइले अनेरे सोग-पीड़ा केने की हएत। जे धारलिऐ से केलिऐ। जानि कऽ वा अनजानमे चूक भेल हएत, से ओ माफ करत।”

ओना बजैक क्रममे जीवन काका बाजि तँ गेला मुदा अपनो मन भीतरे-भीतर कानए-कलपए लगलैन। कानए-कलपए ई लगलैन जे रोशन तँ चेतनशील छल नहि, तखन ओकर बुधि केना क्रियाशील होइतइ आ विचारैत केना जे परिवारमे अहिना कनी कम-बेसी होइते छइ। तहूमे रंग-बिरंगक लोक सेहो रहिते अछि, तँए टुटी-फुटी कनी हेबे करैए।

रंग-बिरंगक माने भेल जे एक वंशक वा एक कुल-खनदानक रहने लोकक शरीरक रंग-रूप, लम्बाइ-चौराइ किए ने एक रंग हौउ, मुदा बुधि-विचार केना एक हएत। ओ तँ भीतर-बाहर दुनूक बीचक शक्ति छी, ओ तँ उमेरोक हिसाबे आ गतिशीलतोक हिसाबे कम-बेसी हेबे करत।

जीवन कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे रोशन तँ ने आब ऐ धरतीपर आबि माइक दूध पीबत आ ने हमरे संगे हँसुआ-खुरपी नेने बाड़ी-झाड़ीमे खसैत-पड़ैत, कनैत-खिजैत जाएत, ओ तँ आब नइ रहल, ई तँ सभकेँ बुझए पड़तैन किने..?

तैसंग ईहो ने बुझती जे रोशन देहसँ हटि गेल, मुदा देही वा शरीरीसँ थोड़े हटल। ओ आत्मास्वरूप चेतन शक्ति छी, पौने दू बर्खक रोशनक ओ शक्ति तँ अपन आत्म-स्वरूपमे मिलि गेल अछि। जइसँ पौने दू बर्ख, एक्कैस मास भऽ गेल। एक्कैस मास चौरासी सप्ताह भऽ गेल आ चौरासी सप्ताह, सात गुणे बेसी दिन भऽ गेल, इत्यादि-इत्यादि भइये गेल अछि किने, तँए स्मृति सनेस नइ देत सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

अनायास जीवन कक्काक निराएल आँखिक बून एक-दोसरमे सटि-सटि टघार बनि गालपर होइत टघरैत रहबे करैन, तही बीच पुतोहुओ आ

पत्नियोँक आँखि चढ़लैन, आँखि चढ़िते विचारक संतरण हुअ लगलैन। तैबीच साउस–सुदामा–संतरण होइते सामंजस करैत पुतोहुकेँ कहलखिन-

“रोशन की तोरेटा छेलह जे हेरेलह आ तोरेटा दुख होइ छह, हमर पोता नइ हेराएल, बुड़हाक ‘बेल’ नइ हरेलैन! सबहक हेराएल! तँए आब सभ कियो अपन-अपन खेलौन नेने अपन-अपन जिनगीमे नइ लगबह तँ काल्हि-दिन केना चलतह।”

पत्नीक विचार सुनि जीवन कक्काक मन पघिल-पघिल कऽ गील हुअ लगलैन। बेलबाक रंग-रंगल रंग सबहक मनमे नाचए लगलैन। अँगनाक रूप बदलल। मन-चित्त दाबि सभ अपन-अपन दिनचर्या दिस बढ़ली।

आँगनसँ दरबज्जापर अबैत-अबैत जीवन कक्काक मन घुमए लगलैन। अपन घुमैत मन देख जीवन काका सोचलैन जे या तँ ओछाइनपर पड़ि रही या नइ तँ बैसिये जाइ। किएक तँ जखन अपने मन बेसमहार भऽ जाएत तखन तँ आरो बेसी नोकसान हएत।

दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया चौकीपर बैसते जीवन कक्काक मन पुतोहुक मुहसँ निकलल शब्द- ‘वर्थ डे’ पर गेलैन। कहाँसँ कहितैथ जे ‘जन्म साल’ छी, जन्म दिन तँ सम्भव नहि अछि। तारीख वा तिथिकेँ दिनक मिलान नइ होइए। वा ‘साल गीरह’ छी, यएह गीरह ने गोठिया कऽ गाँठ बनैए, जेकरा ‘वर्षगाँठ’ सेहो कहै छिऐ...।

मुदा लगले जीवन कक्काक मन पाछू घुमलैन। घुमिते देखलैन जे परिवार-परिवारक लोक टी.वी.क संग आब मोबाइलोमे वर्थ डे मनबैत, थोपड़ी बजा-बजा वर्थ डे गबैत देखैए-सुनैए। कोन माइक इच्छा नइ हेतैन जे कोखिया गुहारि हुअए। जहाँ धरि ‘वर्थ डे’क प्रश्न अछि, ई शब्द छी, बेसी-सँ-बेसी पाँति भऽ सकैए, मुदा भाषा तँ भाषा छी, गंगा सदृश अछि, जइमे नीक-अधला सबहक समावेश होइते अछि। तँए पुतोहुक

बात जीवन काकाकेँ अरूचिगर नहि रूचिगर लगलैन।

ओना तीनू गोरे–माने जीवन काका, जीवन कक्काक पत्नी सुदामा आ पुतोहु श्यामा–तीन दिस नजैर बढ़ौलैन, मुदा रोशनक 'वर्थ डे' किनको मनसँ सोलहन्नी नइ हटलैन। हटबो केना करितैन। जहिना जीवन कक्काक मनमे तहिना सबहक रोशन बसले छल।

भानसा-घरमे पएर दइते श्यामा चुल्हिकेँ गोड़ लगैत बजली-

"हे चुल्हि, अहीं छी आ हमहीं छी जे लालक माने रोशनक पहिल 'वर्थ डे'क दिन केना जीबैत लहलह करैत रहलौं। पहिल सालक 'वर्थ डे'मे ईबेर केत्ता कप चाह अतिथि-अभ्यागतक सेवामे लगा चुकल रही, मुदा आइ..!"

अबैत-अबैत विचारक क्षेत्रमे आबि श्यामा ठमैक गेली। ठमैकते ठकमुरा गेली। ठकमुराइते जेना जिनगीमे लगल जंग छुटि-छुटि जगलैन। जगिते मनमे उपकलैन- यएह छी जिनगी आ जिनगीक लीला। सभ जनै छी जे जे देह रूपमे जन्म लेलक ओ अन्त करबे करत। मुदा देह तँ देहेटा नइ छी, जँ सोल्होअना ओकरा माटियेक मानि लेब सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। चलबो-फिरब आ सोचबो-विचारब दिस ने देखए पड़त।

एकाएक श्यामाक नजैर दौड़ैत रोशनकेँ दुनू हाथे पकैड़, कोरामे उठा, बीच आँगनमे ठाढ़, अपन छातीसँ लगौनेपर पड़लैन। जखन रोशन अपन पहिल साल गिरह पैरमे मौजा-जूतासँ लऽ कऽ देहमे शर्ट-पेन्ट, माथपर टोपी लगा मनौने रहए, ओइ संग परिवारो आ कुटुमो-समाज तँ भरि दिन रोशनेक विरुदावली गबैत रहला, मुदा अपन दोसर साल गिरह रोशन कहाँ देख पौलक! कहाँ हमहीं आकि ई चुल्हिये लहलहा रहल अछि..!

मन-चित्त समेट श्यामा जीवनक दुख-धन्धामे लगि गेली। मनमे उठलैन- पौने दू बर्खक बेटा दुनियाँ छोड़लक, की ओकरा मनमे हमहूँ-

सभ बसल हेबइ? नइ! हमरा सभ जकाँ ओ कहाँ रहल? ने ओ किछु बुझि पबैत हएत आ ने चिन्ह पबैत हएत। ने ओकरा बुझैक आ ने चिन्हैक किछु शेष हेतइ। ओकर सोचै-विचारैक जगहे मेटा गेल, ओ बिसैर गेल हमरा सभकेँ..!

श्यामाक मन थरथराए लगलैन। पानि जकाँ थरथराइत मनकेँ थीर केली। मन थीर होइते मुहसँ बकार फुटलैन-

“कोखिक सन्तान छल। अपना उकिते जे जनलिऐ से तँ करबे केलिऐ। आब बेसी-सँ-बेसी एतबे ने हएत जे अपन दिलक डायरीमे, सन्तानक संख्यामे लिखि कऽ राखब। जँ से नइ राखब तँ प्रसव पीड़ाक वेदना, मातृत्वक जे विशिष्ठता छी ओ हेरा जाएत। जइसँ नारीत्वक शक्तिमे कमी औत।”

मालक घरक थैरमे सुदामा काकी गोबर उठबैले बैसबे केली कि आँगनसँ पछुअबैत रोशनक स्मृति रूप आगूमे आबि गोबरकेँ देखबैत कहलकैन-

“ई-इ-इ..!”

सुदामा दादी बुझि गेली जे नान्हिटा बच्चा गोबर उठबए कहि रहल अछि। सुदामा काकीक मनमे ठहैक एलैन जे की गोबरकेँ घृणाक नजरिये देखा रहल अछि आकि क्रिया स्वरूप?

मुदा सुदामा काकीक सभ दिनक जे काजक अभियास छैन, ओइ अनुकूल बिना मनसँ जपनौं हाथ क्रियाशील भऽ गेलैन।

जखने हाथ काजकेँ पकैड़ कजियबैत जिनगीकेँ कबजियबए लगैत अछि तखने जिनगी कबजियाइत कीर्ति दिस बढ़बे करैए, सुदामो काकीक हाथ बढ़लैन।

आगू बढ़िते मनमे उपकलैन- ई तँ दुनियाँक लीला छी, जेते दिनक खातिर आ जेते भूमिका करैक भार लऽ कऽ रोशन आएल ओ करैत गेल।

मनमे उठिते सुदामाक प्रशान्त मन उदिग्न मनकेँ शान्त करैत रोकैत कहलकैन-

"करोड़ो तरेगनसँ सजल अकासमे साइयो जन्मो लैत आ टुटि-टुटि खसबो करैत, तँए कि अकासक शोभा-सुन्दरमे कमी होइए आकि विलीन होइए, नहि! ओ तँ रहबे करैए। अपनो परिवार ऐछे, तरेगने जकाँ ने बढ़बो करैए आ घटबो करैए। मुदा जैठाम बढ़ती-घटतीक समरूप रहत तैठाम घटवारि-बढ़वारि हेबे किए करत।"

प्रशान्त चित्त होइते सुदामा काकीक मन सहमलैन। सहमलैन ई जे चेतने-अचेतनेक बीच ने दुनियाँ चलि रहल अछि। जखन अही दुनियाँमे अपनो छी तखन ओहीक देखा-देखी ने अपनो चलए पड़त। अपन जिनगीक तँ यएह ने लेखा-जोखा हएत जे जइ दिन धरतीपर पएर देलौं तइ दिनक परिवार की छल, समाज की छल आ आइ की अछि। अही बीच ने कम-बेसी अछि, जइमे लोक अपन हारि-जीत बुझैए। अनेरे मनकेँ वौअबै छी...।

मुदा तैबीच पहिल गोबरक चोत सुदामा काकी उठा नेने छेली आ दोसर चोत दिस हिया कऽ देख रहल छेली, तखने बुझि पड़लैन जे ऐसँ नमहर अछि। उठि कऽ ठाढ़ होइते मनमे उठलैन- रोशनो तँ अपने अमलदारीमे आएल। माने ई जे अपने जीता-जिनगीमे एबो कएल आ गेबो कएल। केना कोनो दादी अपन पोताकेँ बिसैर जाएत? रोशनक दादी हमहीं ने छिऐ, पोता हमरे ने छल, की मनमे जे डायरी विधाता देलैन ओइमे एतबो जगह खाली नै अछि जे अपना रोशनकेँ अपनो मनमे लिखि राखब? पौने दू बर्खक रोशन पौने दू बर्ख जहिना सबहक संग संगी बनि संगबे जकाँ रहल तहिना ने संगबे जकाँ चलबो करत। मालक घर आबि रोशन जहिना गोबर देखबै छल, नाइद-खुट्टा देखबै छल, घूर लग बैस आगियो तपै छल, संगे-संग खेबो करै छल तहिना ने मन-मन्दिरमे बास करैत ताधैर बसैत रहत जाधैर बसै छी।

गोबर समेट कऽ उठा मालक घरसँ सुदामा काकी निकलली तँ चापाकलक चबुतरापर ठाढ़ श्यामापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते आँखि उठा-उठा पुतोहु दिस देखए लगली तँ मन कहलकैन जे रोशन तँ हमर पोता भेल, असल तँ कोखिक रत्न जिनकर छेलैन हुनका मनमे की वरैस रहल छैन। लाल सागरसँ उठल वायु लाल बरखा करैत आकि काला सागरक कारी? मुदा तैकाल श्यामाक नजैर रोशनक ओ रूप देख रहल छेलैन जे दादीक आगू-आगू खेतक खाधिमे लग पहुँच देखबै छेलैन। ओना आगू-आगू रोशनकेँ बढ़ने सुदामा दादीक भार बढ़िते छेलैन मुदा तैयो रोशनकेँ ऐ दुआरे अगुएने चलै छेली जे बाल-बोध अछि, अखन हाथ-पएर असथिर नइ भेल छै, जँ अपने अपन भार कमबै दुआरे पोताकेँ पछुअबैत चलब, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। एक तँ जखने ओकरा पाछू करबै तखने ओ कानत, किएक तँ आगू केतए जाएब से ओकरा बुझले नइ छै, जँ देखलो-बुझल हेतै तँ चंग मन उचैंग गेल हेतइ। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अपनो आँखि (नजैर) अपने आगू ने देखत, जे पाछू रहत तेकरा केना देखत। तेकरा देखैक तँ उपाय यएह ने हएत जे ओकरा आँखिक आगू अपन आँखि राखब...।

अपन बेथाकेँ श्यामा सुदामा दादीपर थोपैत बजली-

“आब ने रोशन अछि आ ने रोशनक दुनियाँ। आब के बुढ़िया दादीक हाथक आँगुर पकैड़ पाछूओ-पाछू चलत आ आगूओ-आगू देखबैत चलत..!”

पुतोहुक बात सुनि सुदामा काकी ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे जँ पुतोहुकेँ किछु कहबैन तँ ओ अनेरे अपन दैनंदिनक क्रिया रोकि समोहमे पड़ि जेती, तइसँ नीक जे किछु बजबे ने करब। अही अगदिगमे सुदामा काकीक मन पड़ल छेलैन। तही काल जीवन काका दरबज्जासँ ई सोचि उठि कऽ कल दिस बढ़ला जे जहिना अपन मन बेलबाक स्मृतिमे वौड़ा रहल अछि जइसँ कोनो काजमे नजरिये ने सन्हिया रहल अछि, तहिना तँ

ने पत्नियोँ आ पुतोहुओकेँ होइत छैन। भानस घरसँ आगू बढ़िते जीवन काका देखलैन जे गोबरक पथिया माथपर नेने पत्नी, खेतमे खुनल गोबरक खाधि लग ठमकल माथपर भारी नेने ठाढ़ छैथ। तहिना पुतोहुओ कलक हेन्डिल पकड़ने सासुक उत्तरक आशा देख रहल छेली।

पत्नियोँ आ पुतोहुओकेँ देख जीवन कक्काक मन मानि गेल छेलैन जे दुनू गोरे अपन-अपन जीवन क्रियामे लगि गेल छैथ। मुदा अपन मनक स्मृति जीवन क्रिया दिस बढ़ए नहि दैन। रंग-रंगक प्रश्न मनमे बर्खाक बुलबुला जकाँ उठैन आ लगले फुटि-फुटि विलीन होइत जाइन। मुदा बर्खोक तँ किछु बुलबुला एहनो होइते अछि जे लगले नहि फुटि पानिक टघारक संग किछु दूर धारा पकैड़ संग धरिया-धरिया बढ़ितो अछि। ओना, छी तँ पानियेँक बुलबुला जइमे स्थायित्व नहियेँ छै मुदा तैयो अपन जिनगी बँचबैत किछु दूर धरि तँ बहिते अछि।

अनायास जीवन कक्काक मन परिवारसँ सर-समाजक ओइ असिरवादपर आबि अँटैक गेलैन जे रोशनकेँ आशीष रूपमे दैत देखने-सुनने छला। ओ विचार फुटि जीवन कक्काक मुहसँ निकललैन-

“कहाँ रोशन दीर्घजीवी भऽ सकल! कहाँ ओ अपन भविसक भवितव्य देख सकल!”

ओना जीवन कक्काक मुहसँ निकैल तँ गेलैन मुदा लगले प्रशान्त मन शान्त करैत कहलकैन-

“ई तँ दुनियाँक खेले छी जे सभ अगिले आशा देख जिनगीकेँ क्रियाशील बनबैए।”

प्रशान्त मनक शान्तचित्त चेतैबते जीवन कक्काक विचारक रूप बदललैन। विचारक रूप बदैलते मन कलशलैन। कलैशते नब टुस्सा जकाँ मन टुस्कियेलैन। टुस्कियाइते जहिना गाम-घरक पानि धारा बनि धार बना गंगामे मिलि गंगासागरसँ मुँह मिलैए तहिना जीवन कक्काक

विचारमे सेहो एलैन। एलैन ई जे सबहक तँ बुझले-गमल, देखले-सुनल अछि जे खाली जीवनेक पोताक संग परिवारमे नहि, आनो-आन अनेको परिवारमे अहिना होइत आबि रहल अछि। एक बाबाक नहि सैयो-हजारो बाबाक पोताक अन्त अहिना भेल अछि, आगूओ हेबे करत। तइले अनेरे मनकेँ विघ्न करैत बेधै छी। जेते समय बेधैत रहत ओते तँ जिनगियेक क्रिया ने ह्रास करत। मन ठमकलैन। ठमैकते जीवन काका बुदबुदेला-

"जेतबेटा औरुदा किए ने रोशनकेँ भेटल हौउ, मुदा छल तँ ओ बेदाग, तखन किए ओकर जिनगी एतबेटा भेल?"

मनक उठल प्रश्न जीवन कक्काक मनेमे घुरिया लगलैन। मुदा उत्तर नहि भेट उत्तेजित होइत संकल्पित भेला। नहि! बेलबा हेराएल कहाँ अछि ओ तँ आँखिक सोझहेमे अछि जे खाली बेलबे नहि, हजारो-लाखो बेला जाड़क खाधिक पानिमे खसि-खसि अन्त करबे करैए। मनमे अबिते दरबज्जापर आबि बैस रहला।

दरबज्जापर बैसल जीवन कक्काक मनमे उठलैन- रोशनकेँ पहिल 'वर्थ डे' दिन सभ कियो दीर्घजीवीक असिरवाद देलखिन, नीक भविसक शुभकामना सेहो देलखिन। मुदा रोशन अपन 'वर्थ डे' कहाँ देख पौलक..!

जीवन कक्काक मन-मियादि उनटए लगलैन, मनकेँ चारू भागसँ अशान्ति घेर लेलकैन। जीवन-मृत्यु आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। पछाइत जीवन-मृत्यु स्वयं एक प्रश्न बनि शान्त केलकैन।

❑ साभार : स्मृति शेष

सजल स्मृति

एक जनवरीक दिन। मासक अन्तिम दिन डॉक्टर सोनी देवी इंगलैंडक अस्पतालसँ सेवा निवृत्ति हेती। रबि दिन, अस्पताल नै जेबासँ निचेन रहने ओछाइनो छौड़ैमे किछु बिलम भेलैन आ परिवारक काजोमे ढील-ढाल रहबे करैन। सुति उठि, बिनु मुँह धोने दू कुर्ड़ा पानि फेकि, बिजलीक चुल्हि पजारि डॉक्टर सोनी देवी कॉफी बनौलैन। ठण्ढ मुल्क रहने चाह सोलहन्नी भरपाइ नै कऽ पबैए। आन दिन जकाँ दू गिलास बनबैक जरूरतो नहियेँ भेलैन।

एक तँ ओहुना मन असकताएल तैपर काजक सुभिता भेने अनुकूलता अबिते अछि। जे डॉक्टर सोनी देवीकेँ सेहो भेलैन। आन दिन तँ अस्पतालक काज मनकेँ अपना दिस बहटारने रहै छेलैन से नै रहने मन अपन परिवार दिस घुमौलकैन। घुमिते मन पतिपर गेलैन। पति डॉक्टर मनमोहन सेहो सर्जन पदसँ एकतीस दिसम्बरकेँ सेवा निवृत्ति भेला जेकरे हिसाब-किताब दइले तीन दिन पहिने अस्पताल गेला, अरवन धरि किए ने एला। काल्हिये तक तँ नोकरी छेलैन।

भरिसक केतौ हिसाब-किताबमे ने तँ लटपट भेलैन। पतिक काजक लटपटसँ सोनी देवीक मन गहियेलैन। गहियेलैन ई जे ऐ अबस्थामे काजक लटपट भेने काजो भरिया जाइ छइ। हाथोक काज

अनका हाथ गेने जुति-भाँति बदैले जाइ छइ। जँ से भेल हेतैन तँ पेन्शन जे लटपटेतैन से तँ लटपटेबे करतैन जे जिनगी भरिक सभ केलहा-धेलहा सेहो पानिमे चैल जेतैन। पानिमे ई जेतैन जे जइ कुरसीपर बैस आनक काज करै छेलौं, तैठाम आन अपन काज करत। तँए अपन किरदानी लोककेँ अपने बिसाइ छइ। तहूमे सेवामे रहैत तँ किछु बँचितो छै जे सेवा निवृत्तिक पछाइत तँ ओहो धुआ जाइ छइ। मुदा उपय? 'उपय' लग अबिते सोनी देवीक मन ओहिना अड़ियेलैन जहिना कोनो बोहैत धारक आगू बान्ह पड़ने अड़ियाइ छइ। मुदा जहिना धाराक पानि पाछूसँ अबैत धाराकेँ रोकैत ठमकैत फुलऽ लगै छै तहिना सोनी देवीक मन फुलेलैन। फुलाइते नजैर अपना दिस बढ़लैन। बुदबुदेली-

"एकतीसम दिन अपनो यएह गति हएत!"

मुहसँ अपन गति फुटिते सोनी देवीक मन जिनगीक स्मृतिमे डुमि गेलैन। हृदैक पुरना डायरीक पन्ना उनटए लगलैन। केतए गेल ओ गामक सखी-बहिनपा, पाबैन-तिहार, मेला-ठेला, खेनाइ-पीनाइ आ ओढ़ब-पहिरब? पाछू दिस बढ़िते डॉक्टर सोनी देवीक मनक डायरीक पहिल पन्ना उनटलैन। जहिना किताब उनैटते पहिल पृष्ठ सोझहा अबैत तहिना सोनी देवीक सोझ स्मृतिक डायरीक पन्ना उनटलैन। उनैटते जन्मक कथा भेटलैन। मात्रिकमे जन्म भेल छल जे डेढ़-सालक पछाइत अपन गाम (माए-बापक) एलौं।

ओना, दोसरो-तेसरो धी-बेटीक सन्तानक परम्परा नैहरक रहल, मुदा पहिल सन्तान तँ अनिवार्य रूपे रहबक परम्परा अदौसँ अबिते अछि। जन्म मन पड़िते, अपन नाना-नानी, मामा-मामी, भाए-बहिन, सर-समाज चौबगली घेरि लेलकैन। अनायास हाथक ओंगरी घुसैक दोसर पृष्ठपर पहुँचते उनैट गेलैन। पृष्ठ उनैटते डॉक्टर सोनी देवीक नजैर बाप-माएपर पड़लैन। मन पड़लैन डॉक्टर सोनी देवीकेँ, जखन दू बर्खक रही आ चुल्हितर माए भानसो करै छेली आ हमरा खुआ-पीआ कऽ, अपने बीच

(माने एक भाग सोनी देवी, दोसर भाग आगिक चुल्हि, तैबीच)मे आगूमे जहिना चिड़ै-चुनमुनी चहरा आनि अपना बच्चाक आगूमे छिड़िया दइ छै (ओना, पहिने लोलसँ लोलमे दइ छै) जेकरा बीछि-बीछि बच्चाकेँ खाइत देख माइक हृदैक धार बहए लगैत तहिना ने हमरो आगूमे धानक, रमदानाक, भैंटक, मलकोकाक आ खुभीक लाबा छीटि दइ छेली आ बीछि-बीछि खाइत देख मने-मन गंगा स्नान करैत रहै छेली। तही बीचमे ने भात, रोटी, तीनम, तरकारी सेहो सभ सीखबै छेली। कोनो कि अनाड़ी माए रहैथ जे सुतैकालक ओछाइन-बिछाइनिक नाओं नै सीखा खेबा-पीबा कालक सिखैबतैथ। चुल्हिये लग ने पहिने भात सिखौलैन पछाइत अरबा-उसना भात सिखौलैन। तइ पछाइत ने मोटका-मेहीका, बसिया-तेबसिया इत्यादि सिखौलैन। ओना, सीखेबे नै केलैन, मुहसँ बोलो फोड़लैन। भलेँ ताबे कण्ठ, जीह, मसुहैर, दाँत इत्यादि नीक जकाँ सड़ास नै भेल रहए तँए अधखड़ुए बोल मुहसँ निकलए। दाँतो अदहे-छिदहे भेल रहए।

ऐगला पृष्ठ उनैटते डॉक्टर सोनी देवी ओ दिन देखलैन, जइ दिन पिताक संगे जा स्कूलमे नाओं लिखौलैन। चारि-पाँच बर्खक भऽ गेल रही। चारि बर्ख पुरि, पाँचम चढ़ि गेल रहए, मुदा पुरल नै रहए। गामेक स्कूल गामेक चटिया। सेहो टोले-पड़ोसेक। किए मिसियो भरि अनभुआर लगितए। अनभुआर तँ ओतए चटियाकेँ लगै छै जेतए देशक कोण-कोणसँ आएल पाँच बर्खक बच्चाक बीच रंग-रंगक बोली, रंग-रंगक चालि-ढालि, रंग-रंगक खेनाइ-पीनाइ रहै छइ। जैठाम से नै तैठाम अनभुआरे की हएत। दुर्गापूजाक समय सखी-बहिनपाक संग केना चारि बजे भोरे उठि, फुलडाली लऽ सिंगहारक, अरहुलक, चम्पाक फूल लोढ़ि पूजा लेल दुर्गास्थान पहुँचबै छेलौं। पहिने फूल लोढ़ि फुलडाली आँगनमे रखि लइ छेलौं, पछाइत चिक्कैन माटिसँ सबहक संग दुर्गास्थान नीपै छेलौं आ तेकर बाद आँगन आबि-आबि नहाइ छेलौं, नव वस्त्र पहीरि फूलक

फुलडाली देवालय पहुँचबै छेलौं। भीतरे-भीतर डॉक्टर सोनी देवी स्मृतिक डायरीक पन्ना पढ़ि-पढ़ि विस्मित होइत गेली।

मन पड़लैन पाबैनक उपास। रामनवमी-कृष्णाष्टमी, देवोत्थान, हरिवासय, नर्क निवारण चतुर्दशी। सभ छुटि गेल।

छुटिते मन उमकलैन। जहिना गाए-महींस उमैकते बोलियो दैत आ मलकबो करैत तहिना सोनी देवीक मन उमकैत बोली देलकैन। की नै छूटल? गामक परिवार छूटल, समाज छूटल, पाबैन-तिहार छूटल। उपास-व्रत छूटल, देवी-देवता छूटल, देववाणी छूटल! छुटि गेल अपन खान-पान, अपन ओढ़न-पहिरन! जैठाम छी तैठाम जे पाबैन-तिहार आ देवी-देवता छैथ, ओ भिन्न छैथ तइसँ नै जाइ छी। पाबैन नै करै छी। जहिना गामो-घरमे किछु पाबैन एहनो होइए जे सभ करै छैथ। आ एहनो होइए जे किछु गोरे करबो करै छैथ आ किछु गोरे नहियोँ करै छैथ। एहनो तँ हेबे करैए जे जँ साल दू-साल तीन-साल छुइटो जाइए तैयो फेर जान-पराण दऽ लोक जीआइए लइए। जँ से नै जीअबैए तँ तीनसला-चरिसला रौदी-दाहीक कहात् समय भेने नवान छुटि फेर कुशियारक गोभ जकाँ पनैप केना जाइए? लगले सोनी देवीक मन अगहनक नवान (ओना, कातिकोमे नवान होइ छइ।) सँ पाछू डेगे ससरली तँ छैठ पाबैन कुदि कऽ आगूमे एलैन। छैठपर नजैर पड़िते मन चकोना भेलैन।

चकोना होइते एकटा कोणमे देखलैन छैठक सुरूजक अर्घ। मुदा वएह सजल कोनियाँ पहिलो दिन आ दोसरो दिन निवेदित होइत। ओकरे नवेद्य पड़ैत। ओना, मिथिलांचलक पाबैनक पद्धति छी, पटनियाँ भलें सौंझुका कोनियाँ साँझेमे उसारि रखि भोरुका कोनियाँ अलगसँ किए ने सजबैत। खाएर जे से। अदौसँ उदय-अस्त वा अस्त-उदयक नमस्कार निवेदित करबाक परम्परा रहल अछि, अखनो अछि। अखनो दुआरपर पहुँचैत पाहुनकेँ ऐबतो आ जाइतो हाथ जोड़ि नमस्कार निवेदन निवेदित होइते अछि। लगले मन फेर घुसैक चौमुखी दीप सजल कुड़पर गेलैन।

केना बाँहिसँ पकैड़ आँगनसँ छैठक घाटपर लऽ जाइ छेलों आ घाटपर सँ जरैत दीपक कुड़ आँगन नेने अबै छेलौं। भलेँ ओ दुनू कुड़ो आ दीपो माइटेक बनल किए ने रहौ, मुदा आगिमे पकौल रहला पछाइतो तँ माटिपर खसने फुटबे करैत। केते होशियारीसँ काँखतर दबने जाइ छेलौं आ अबै छेलौं। लगले मन मुरैछ गेलैन। मुरछलैन ई जे अखन देखै छी जे एक घन्टा दारू पीबैमे बिलम भेने लोक पगला कऽ पगलपनी करब शुरू कऽ दइए आ केना सतरहे-अठारहे बर्खमे हरिवासय उपास, अन-पानि छोड़ि कऽ लइ छेलौं। (हरिवासय उपास अढ़ाइ दिनक होइ छइ।) सभ छुटि गेल। छुटि गेल मात्रिक, छुटि गेल नैहर, छुटि गेल सासुर (जे अपन घर होइत) छुटि गेल सभ समाज। एकाएक जेना मनमे तरसँ बमगोला छुटलैन। बमगोला छुटिते अवाज निकलल-

"जखन सभ किछु छुटि गेल तखन रहल की। यएह ने मृत्यु छी जे जड़-चेतनक विछोह भेल।"

जीवन-मृत्युक बीच झुलैत डॉक्टर सोनीक मन कदमक गाछक ओइ झूलापर गेलैन, जेतए आस मारि झूलल रहैथ। तही बीच स्मृतिक डायरीक ओ पन्ना उनैट गेलैन जइमे मेडिकल कौलेजमे प्रवेशक चर्च छल। केना हाइए स्कूलमे डॉक्टर बनैक मनकामना केने रही। जँ से नै केने रही तँ दसमेसँ किए बायोलौजी पढ़ब शुरू केने रही। जिनका इंजीनियर बनैक रहैन ओ गणित पढ़ै छला। त्रिवेणी जकाँ केते नीक संयोग छल, एक तँ महिला आरक्षित सीट, तैपर नीक नम्बरक संग कौलेजक सम्बन्धित प्रोफेसर। एकाएक प्रवेश दिनक राखल पत्रपर नजैर पड़लैन। एक थाक पत्र एकटा ललका झोरामे थकियाएल परिवार, समाज, कुटुमक संग विभागक राज्ये नै देशोक आशा तँ हमर भविसपर छइहे...।

अपनो जखन कौलेजमे पढ़ैत रही तँ झण्डा उठौने रही जे जन-जन तक चिकित्सा भेटौ। मुदा भेल की? केतए गेल अपन संकल्प केतए गेल

अपन व्रत। मुदा तइ समय कहाँ बुझै छेलौं जे एना देश छोड़ि आन देशमे जीवन बीतत। हमरासँ समाजकेँ कथी उपकार भेलइ। जइ दिन मेडिकल कौलेजमे नाओं लिखौने रही तही दिन केते गोरे डॉक्टरक माला पहिरा असीरवाद देलैन। केतए गेल ओ असीरवाद। ओ अपन कर्तव्य पुरबैत असीरवाद देलैन। मुदा असीरवादक उत्तर हम कथी देलिऐन। केना समाजशास्त्री मनुखकेँ समाजिक जीव मानलैन। मुदा भेल एना किए?

नव प्रश्न उठिते डॉक्टर सोनीक दहिना हाथ सेहो डायरीक ऐगला पृष्ठ उनटौलकैन। डॉक्टरी डिग्री लेला पछाइत बिआहक गप-सप्प उठल।

साल भरि पहिने डॉक्टर मनमोहन कौलेजसँ निकलल छला। छह मास धरि जहाँ-तहाँ नोकरीक लेल बौएला, मुदा केतौ गर नै लगलैन। तखन देश छोड़ि बाहर जेबाक विचार केलैन। इंगलैंडमे भेकेन्सी रहै, आवेदन केलैन नोकरी भऽ गेलैन। गामो-घरमे नव-नौतुक डॉक्टरकेँ पहिलुका डॉक्टर थोड़े बास हुअ दिअ चाहैए। तैसंग अपनो काजक प्रसार नहियेँ भेल रहए जे काज कुदि कऽ आगू आबि गवाही दइतै। तँ अहुना जहिना सभ अपना बेटाकेँ इंजीनियरे-डॉक्टर बनबए चाहैए तहिना ने नोकरियो अमेरिका, इंगलैंड देतइ। जाइले सभ चाहैए। एक तँ अहुना डॉक्टर बनि मनमोहन जेता, परोपट्टामे चर्चक विषय बनि गेल छल। पितोकेँ बिआहैक रहैन। जुआक पाशा जकाँ अपन सम्पैत अरोपि बिआह कऽ देलैन। इंगलैंड एलौं। अपनो नोकरी भेल। तीनटा बालो-बच्चा भेल जेकरा पढ़ेलौं-लिखेलौं। मुदा बिआह केलक अपना विचारे। ओना, सभ नोकरिहारा, तँए परिवार चलैक गर पकड़िये लइ छैथ। मुदा अपना किछु रहल कहाँ लगमे। (लगक माने अनुकूल जीवन। अनुकूल जीवन माने मिथिलाक जीवन-दर्शन।) आँखि जखन डायरीक नीचला पाँतिपर गेलैन तखन देखलैन जे केना सृष्टिक विकासमे पुरुष-नारीक योगदान होइ छइ। केना सन्तानोत्पति होइ छइ। की प्रसव पीड़ाकेँ बहलैत मनक सुख बुझि नारीक नारित्वकेँ निमुआँग कएल जाए? केना अपन जन्म मात्रिकमे भेल,

माएसँ माए जोड़ल छेली। दुनू परानी अनुभवी शिकारी छला। (नाना-नानी सन्तानोत्पतिक) सम्बन्ध सूत्र तेना बनल अछि जे बाँस-केरा जकाँ ओधिसँ ओधि जुड़ल अछि। मुदा ऐठाम तँ सभ टुइटो गेल आ जे बँचल से छुइटो गेल। टुटल अपन परिवार-समाज आ छुटल ऐठामक नोकरीक जिनगी। जैठाम लोक कमाइ-ले जाइए आ समाज बनै छै, ओ भेल नोकरिहारा कमौआक समाज। मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत ओ अनेको कारणे छुटए लगै छइ। छुटए की लगै छै जे जहिना दिन बढ़ने काज बढ़ै छै आ दिन घटने काज घटै छइ। तँए ने गरीबीकेँ दिन घटब आ अमीरीकेँ दिन बढ़ल कहल जाइ छइ।

मेलाक यात्री जकाँ धक्कम-धुक्का खाइत डॉक्टर सोनीक मन ठेहियेलैन। मुदा लगले ठेही उतैर गेलैन। उतैर ई गेलैन जे डॉक्टर छी, भेल तँ दस-बीस बर्ख आरो जीब, कहुना पेंशनोपर कटिये जाएत, तरखन भेल मरैबेर। अपनो बुझै छिऐ आ आनो सभ बुझिते छैथ जे मरैबेर एहेन पीड़ा होइ छै जे लोक मरिये जाइए। मुदा युगोक तँ अपन धरम होइ छै, जखन लोकक मन मानि लइ जे दू-तीन दिनमे मरि जाएब तरखने किए ने मतबैबला निशाँक सुइया लऽ लेत जे पीड़ा हेबो करतै तँ बुझबे ने करत। जइसँ सुखेसँ मरब हेतइ। सभ तँ सएह ने चाहै छैथ। कनैत तँ सभ अबैए, हँसैत जाएब ने मुकद्दरक सिकन्दर भेल।

नअ बैज गेल। अखन तक डॉक्टर सोनी ने मुँह-कानमे पानि नेने छेली आ ने अपन नित्यकर्मसँ निवृत भेल छेली। घड़ीपर नजैर पड़िते मन हरहरेलैन। जलखै बेर भऽ गेल, मुदा लगले मन बदैल गेलैन। छुट्टीक दिन छीहे, अनेरे किए चुल्हिमे हाथ घोंसियाएब, तइसँ नीक जे बिस्कुट संग चाहे पीब लेब। जहिना अगम पानिमे हेलनिहारक सभ किछु अगम भऽ अगमा जाइ छै, तहिना सुगम पानिमे हेलनिहारकेँ सेहो सभ किछु सुगमा जाइ छइ। डॉक्टर सोनियोँकेँ सहए भेलैन।

चाह-बिस्कुट आगूमे डॉक्टर सोनी रखिते रहैथ आकि डॉक्टर

मनमोहन पहुँचलखिन। सुखाएल मुँह, हदास उड़ल चेहरा। पतिकेँ देख डॉक्टर सोनीक मनमे एकाएक जोड़क धक्का लगलैन। धक्का ई लगलैन जे जखन काजसँ अवकाश भेटलैन, तखन जान हल्लुक भेलैन की भारीए। जखन जान हल्लुक भेलैन तँ मनमे खुशी हेबा चाही किने, से किए ने छैन। मुदा किछु छी तँ परिवार छी किने, परिवारक सभकेँ अनुकूल बनि चलबे ने परिवार चलब भेल। कुशल-समाचार पुछब छोड़ि डॉक्टर सोनी पतिकेँ कहलखिन-

"रस्ताक मारल आएल छी, भूख-पियास लागल हएत, पहिने किछु खा-पीब कण्ठ सर्ड़ास करि लिअ तखन कुशल-समाचार हेतइ।"

कहि अपने-ले आनल चाह-बिस्कुटमे सँ बाँटि दुनू गोरे, बिस्कुट तोड़ि मुँहमे लेलैन। मुदा जेना चिराकी चाउर खेने मुँह लठिआइ छै, तहिना डॉक्टर मनमोहनकेँ होइन, मुदा गिलासक पानि पीब कण्ठ सर्ड़ास करैत बजला-

"पाँच साल आरो नोकरी करैक आवेदन देलिऐ। मुदा दोसर, जेकर परमोशन हेतइ, एहेन विरोध केलक, जे नै भेल।"

जेना डॉक्टर सोनीकेँ बुझले रहैन तहिना टपैक पड़ली-

"तीनियेँ साल-ले दैतिऐ।"

मुदा डॉक्टर मनमोहनकेँ थाहल-नापल काज तँए गम्भीर होइत बजला-

"तीनियोँ साल-ले देने काज थोड़े होइत। जे विरोध केलक ओकरा अढ़ाइए बर्ख नोकरी बँचल छइ।"

डॉक्टर सोनी-

"जखन ओ जुनियरे भऽ काज करै छला तखन हुनके किए ने बुझा-सुझा देलिऐन।"

पत्नीक विचार सुनि डॉक्टर मनमोहनक मन मड़कलैन। मड़कलैन ई जे सभ अपन पद, प्रतिष्ठा आ धन चाहैए, तैठाम कहब उचित होएत। मास दिनक पछाइत जखन डॉक्टर सोनियोँ सेवा निवृत भेली तखन दुनू परानी अपन कपार मिलौलैन। साल भरि दुनू परहेज केने रहला। परहेज ई जे बिनु कमौआ पुतकेँ कमौआ घरवालीक आगू विधवे बूझल जाइए। तँए दुनूक बीच-सधवा-विधवाक सम्बन्ध बनि गेल छेलैन। भिनसुरका कॉफी पीब दुनू परानी मनमोहन-सोनी गद्दीबला आराम कुरसीपर मलड़ैत चीत गरे ओंगठि (जेना अखड़ाहापर खलीफा चीत होइए, तहिना) भविसवाणी करए लगला।

भविसवाणीक जरूरतो तँ रस्तेक मोड़पर ने होइत। नोकरी जिनगीसँ दुनू बेकती सेवा-मुक्ति भेल छला। जिनगी जीबैले सेवा आवश्यक अछिए। जँ सेवे नै तँ मेवा केतए फड़त। सेवाक विचार मनसँ हटिते अपन जिनगीक योग-क्रिया आ भोग-क्रिया टपैकते अछि। मुस्की मारि डॉक्टर मनमोहन बजला-

“मन होइए जहिना पहिलुका लोक ढाका-बङ्गालमे कमाइतो छल आ मिथिलाक भूमिकेँ पकैड़ घरो बनौने छल, तहिना ऐठामक सभ किछु बेचि-बिकीन गामे चैल जाइतौं।”

पतिक विचारमे बिठू कटैत डॉक्टर सोनी बजली-

“गामक लोक पूछत?”

मजाके-मजाकमे दुनू बेकती विचार-मणि दिस विदा भेला। रस्ताक मोड़ टपिते जेना डॉक्टर मनमोहनकेँ फुरलैन, बुदबुदेलथि-

“जेना गामक सुरता मनकेँ पकैड़ रहल अछि।”

पतिक मनक सुरता सुनि डॉक्टर सोनी जिनगीक बाटमे हरा गेली। सिनेमाक रील जकाँ मातृकक जन्मसँ पटना हवाइ अड्डा तकक जीवन-यात्रा आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। बजली- “आब की करब?”

पत्नीक विचारकेँ डॉक्टर मनमोहन जीवन संगीक प्रश्न बुझि गम्भीरतासँ लेलैन। बजला-

“अबैकाल किछु परिस्थितिवश आ किछु लोकोक मुँहक बोलसँ प्रभावित भऽ केलौं, अपनो जीबठ बान्हि अपने गाम-समाजमे अपन जिनगी ठाढ़ करितौं। मुदा से भेल नहि। मिथिला सन धरती जे त्रिगुण मौसमक बीच अपन अजर-अमर देह धारण केने छैथ, तइ धरतीकेँ छोड़ि ऐठाम एलौं। पैंतीस सालक जिनगी गामक जिनगीसँ अलग जिनगी बना अपनाकेँ ठाढ़ केलौं।”

कहि चुप भऽ गेला।

पतिकेँ चुप होइत देख डॉक्टर सोनी बजली- “चुप किए भेलौं? अपनो अनुभव कऽ रहल छी जे परिवारिक जिनगीसँ समाजिके जिनगीटा सँ नै हटलौं, शरीर जलवायु अनुकूल अपनाकेँ अंगेज बना लइए। तेतबे नै, देहक क्रियासँ आगू समाजिक क्रिया सेहो अछि।”

पत्नीक विचार सुनि डॉक्टर मनमोहन ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे रहैक घरसँ लऽ कऽ खेनाइ-पीनाइ, बजनाइ-भुकनाइ सभ किछु बदैल गेल। गाम जेबाक मनकेँ तँ बुझबए ने पड़त, जे जेठक रौदा, भादवक पानि, माघक जाड़केँ पचबैक शक्ति अछि किने। बजला-

“जँ मन गाम जाइक अनुकूलो हएत तँ शरीर नै गछत।”

“तखन?”

“तखन एतैसँ गामकेँ गोड़ लगैत रहू जे अहाँ बड़ सुन्नर छी, मिथिलामे बास करै छी। जेतए जनक सन राजा भेला सीता सन जगतजननी भेली। जामंतो रंगक फुलक फुलवारीसँ सजल फुलवारी छेलैन। गुरुक संग राम एला, धनुष तोड़ि चारू बहिन सीताक संग चारू भाँइक बिआह भेलैन। वएह मिथिला छी।”

❑ साभार : लजबिजी

सेहन्ता

भिनसुरका समय। ओना घड़ीक सात बजि गेल मुदा ने सुर्ज भगवान अपन कुह फाड़ि उगि सकल छला आ ने दिनेक आभास बुझि पड़ै छल। शीतलहरीक लपेट चलि रहल छल। पूस-माघ मासक बीचला आड़ि परक समय रहने दुनू समगम छल। सात बजे शंकर काका अपन भिनसुरका कर्मसँ निवृत्त होइत, चाह-पान करैत दरबज्जापर बैस परिवारजनक दुख-सुखक बात सुनबो करै छला आ ओकर निमरजनाक परियास सेहो करै छला। परिवारे छी, सभकेँ अपन-अपन भुक्ति अपन-अपन मुक्ति-ले रहिते अछि।

ओना शीतलहरी दुआरे शंकर काकाकेँ ओछाइन छोड़ि उठैमे बिलम सेहो भेलैन आ ठण्ढक तेज आक्रमणसँ सेहो पछुआ रहल छेलैन्हे। होइतो अहिना छै जे जँ प्राकृतिक मौसम अनुकूल रहल तँ अपनो मन मौसमक अनुकूल भेल, जइसँ काजक अनुकूलता भेने समयक हिसाबसँ गति-विधि बढ़बे करैए, तहिना प्रतिकूल भेने सेहो घट-घटाव होइत घटबे करैए। पैखाना जाइसँ पहिने तमाकुल चुना शंकर काका ठोरमे लइते छला कि पवित्री काकी लगमे आबि कहलकैन-

“बहुत दिनसँ मनमे एकटा बात औनाइत चलि आबि रहल अछि से पुछैक ने तेहेन गरपर अहीं चढ़ै छेलौं आ ने अपने तेहेन गर लगै छल,

तँए मुँह झाड़ि कहियो किछु ने कहि भेल, से..?”

ओना, शीतलहरीक झटका शंकार कक्काक देहक संग मनकेँ शान्त-शीतल केनहि छेलैन तैपर पत्नीक सुवचन सुनि आरो शान्तराम भऽ गेलैन। बजला-

“एकटा किए, जेतेक छुटलाहा बात अछि सेहो आ आगुओक हजारटा बात पुछि लिअ।”

ओना, शंकर काका पवित्री काकीक विचारकेँ हलुकाएल - फलुकाएल बुझि जिज्ञासा केलैन, मुदा गहिंराएल काजकेँ जँ हलुआएल बोलसँ पुछल जाए तँ उत्तर देनिहारक मनमे धोप-चट हेबे करत किने। सएह शंकर काकाकेँ सेहो भेलैन। ओना, शंकर काका जेहने काजक गहिंरगर तेहने विचारोक छथिये, मुदा अखन पत्नीक प्रश्नकेँ ऊपरे मने लेलैन।

पतिक विचार सुनि पवित्री काकी औनाए लगली। औना ई लगली जे पैछला छुटलाहासँ ऐगला धरिक हजार बात कहैले कहलैन। मुदा ऐगला हजार कि लाखो-करोड़ो बात-विचार जे अछि ओहो तँ छुटले अछि। तखन तँ यएह ने भेल जे पाछूसँ आगू धरिक सभटा छुटले अछि। जेतए एहेन छुटलाहा बात-विचारक बोन-झाड़ अछि तेतए की पुछबैन आ की नइ पुछबैन..?

पवित्री काकी अगदिगमे पड़ि गेली। मुदा अगदिममे रहली नहि, एकाएक सचेत भेली। सचेत ई भेली जे जखन दुनियेँ छी, जइमे रंग-रंगक हजारो-लाखो गाछ-बिरीछ अछि, हजारो-लाखो जीव-जन्तुक संग हजारो-लाखो बीघामे पानियोँ अछिए..! असगरे केते उपछब..! मुदा थकथकाएल मनकेँ एकाएक थीर करैत पवित्री काकी बजली-

“जहिना सभ दिन एके सिरहन्ने रहलौं तहिना आगूओ सभ दिन एके सिरमे जरन-मरन केना हएत? सएह सिहन्ता मनमे तही दिनसँ

औनाइए जइ दिन दुनू गोरे एक मरबापर बैस जिनगीक संगी बनलौं।"

ओना, पवित्री काकीक विचारमे जे रहल होनि मुदा तैपर धियान नहि अँटका शंकर काका फुसियारि पत्नीक फुसियाह पति बनि फुसियबैत बजला-

"ई तँ अहाँ हमरे मनक बात बजलौं! हमहूँ की ऐसँ हटल छी।"

शंकर कक्काक विचारक चपचपीमे पवित्री काकी चपचपा गेली मुदा मन ओइ चपचपीकेँ कबुल नहि केलकैन। मनमे उठलैन जे पुछलयैन किछु आ बजला किछु। तहुमे तेहेन बात बजला जेकर कोनो लागि-भागि विचारसँ अछिए नहि! ओना, हमरा हिसाबे तँ हिनकर प्रश्नोत्तरीक समय छिऐन, मुदा शीतलहरीक जे रूप अछि ओइमे धरतीसँ अकास धरि चपेटाइये गेल अछि, भरिसक हिनको मन तही कन-कनीमे कन-कना गेल छैन। आ तँए जनु हीय सेहो काँपि रहल छैन, मुदा हमरासँ छिपा रहल छैथ। जँ से नहि तँ किए जीवन-संगी रहितो बाल-बोध जकाँ फुसिया रहला अछि?

बाल-बोधक फुसियाएब मनमे अबिते पवित्री काकी तरंगित होइत मन तरैंग गेलैन। बजली-

"दिल्लीक लड्डु जकाँ फुसियाउ जुनि। अपनो आँखि देखैए जे अखने ओछाइन छोड़लौं हेन, भिनसरू पहरक नित्य-क्रिया सेहो पछुआएले अछि।"

पत्नीक चोटाएल बात सुनि शंकर कक्काक मन चटकलैन। चटैकते बजला-

"भोरे-भोर एना किए आगियाएल छी। पहिने ऐ आगिकेँ चुल्हिमे पजाइर चाह बनौने आउ। ताबे हमहूँ मुँह-कानमे पानि लऽ लइ छी।"

पतिक आश्वासन पेब पवित्री काकीक मन मानि गेलैन जे अखन जेहेन शीतलहरीक सरदी पसरल अछि तइमे केकरो विचार सरदीसँ

सरदिया जा सकैए मुदा जिनगी तँ से नहि छी, तहूमे पति-पत्नीक बीचक जीवन छी। पुरुखे ने ई बात बुझता जे बाल-बच्चा सेहो माइयक दू-चारि बर्ख उमेर खाइते अछि, तँए दू-चारि-पाँच साल कम उमेरक कन्याक संग बिआह होइए जे दुनू हिसाब माइनस-प्लस करैत एक रंग भेल, तँए जहिना एक सिरहन्ने जीवन गुदस होइए तहिना ने अन्तो-अन्त तक हेबा चाही।

एक तँ पूस-माघ मासक नमहरका राति, कोनो बैशाख-जेठक राति नहि। जइसँ मन अरामक अभावमे हराम जकाँ करत। आइ जँ बैशाख जेठक समय रहैत तँ थोड़-थाड़ मानलो जा सकै छल, मुदा से तँ अछि नहि।

ओना, पवित्री काकीक विचार शंकर कक्काक मनमे तेना घुरिया-फिरिया लगलैन जे तमाकुल खेने छला पैखाना जाइक खियालसँ मुदा से बिसैर पत्नीयेँक गपमे अँटकल रहि गेला। थोड़ेकालक पछाइत जखन पत्नीक चाह मन पड़लैन कि हाँइ-हाँइ कऽ दतमैनसँ चारि घूसा दाँतमे लगा, जीहकेँ जीभियासँ जीभिया, कुर्ड़ा करि पानि पीब एला। तैबीच पवित्री काकी सेहो चाह नेने पहुँच चुकल छेली।

एक घोँट चाह पीब शंकर काका बजला-

“हमरा होइ छल जे आइ करूआएल मने करूआएल चाह बना पीआएब मुदा से नहि, बड़ निम्मन चाह अछि!”

पतिक बातपर पवित्री काकी ओते धियान नइ देली जइ हिसाबसँ शंकर काका बाजल छला। किएक तँ अपन ओहन प्रश्न पवित्री काकीक मनकेँ घेरि नेने छेलैन जे केम्हरो तकैये ने दैत रहैन। चोट्टे आँगन जा पवित्री काकी अपनो चाह पीली। चाह पीब अपन विचारक प्रश्नकेँ ओरियौने पुन: दरबज्जापर पहुँचली। तैबीच शंकरो काका चाह पीब पान खा दरबज्जाक ओसारक चौकीपर देवाल लगा ओङ्ठि बैस चुकल छला।

आगूमे बैस पवित्री काकी बजली-

“चाहो पीलौं, पानो खेलौं तैसंग भिनसुरका क्रिया-कर्मसँ निवृत्त सेहो भइये गेल छी तँए आब..?”

आगूक बात पवित्री काकीक पेटेमे रहैन कि तइ बिच्चेमे मुँहक बात छिनैत शंकर काका बजला-

“हँ-हँ, से तँ भइये गेलौं। आब कहू जे अहाँ की पुछने छेलौं।”

शंकर कक्काक समगम मन देख पवित्री काकी बजली-

“यएह ने कहने छेलौं जे जहिना बिआहक मरबापर जे जीवन-संगिनी बनलौं ओ जरन-मरन धरि बनल रही।”

पवित्री काकीक प्रश्नमे केतौ खोंच-खाँच नहि देख शंकर काका बजला-

“से तँ अपनो विचार अछि। होइतो अहिना छै ने जे पतिक मृत्यु अपना औरुदे भेल आ अछैते औरुदे पत्नी अछियामे शरीरान्त कऽ संगी बनि मृत्यभुवनमे ओहिना रहै छैथ जहिना जीवितमे एक बात-विचारक संग मर्तभुवनमे रहै छैथ, तइमे भेद-भाव की बुझि पड़ैए?”

जहिना न्यायालयमे वकील, ऑपरेशन थियेटरमे डॉक्टर आ क्लासमे शिक्षक अपन पूर्ण तैयारीक संग जाइ छैथ तहिना पवित्री काकी पतिक संग सबाल-जवाब करैले तैयार छेली जे जे प्रश्न उठत ओकर जवाब देब। बजली-

“कहलौं ते बड़बढ़ियाँ जे अपना ऐठाम पतिक अछियामे हवन करैत पत्नी अपन सतीत्व निमाहै छेली, मुदा ओहन प्रथा तँ किछु परिवार विशेषक छल सौंसे समाजक नहि। जइमे अपना सबहक परिवार तँ नहियेँ छल तखन केना हएत?”

पत्नीक विचार सुनि शंकर कक्काक मन चनकलैन। अपन विचारकेँ

अपना सोझहेमे हत्या होइत देखलैन। ओना, शंकर काकाक जिनगीक सोचक आगूमे पवित्री काकी हल्लुक छेली, मुदा प्रश्नोक तँ अपन वजन होइए, तइमे पवित्री काकी सिरचढ़ भऽ गेल छेली। अपन मान सतीत्वक विचारकेँ शंकर काका ओतइ चोपैत कऽ मनमे समेट लेला आ जहिना कोनो गाममे बहैत धारकेँ गौंआँ सभ अपन गामक धार बुझै छैथ मुदा ओही गौंआँमे किछु एहनो पारखी लोक तँ छथिये जे धारकेँ जड़िसँ पकैड़–माने जेतए-सँ धारा बनि धार चलैए तेतैसँ–पकड़ने-पकड़ने अपन गामक धार देखैत आगू केना-केना बढ़ैत समुद्रमे मिलैए तेतए तकक खोज करैत वीण बजबै छैथ, तहिना शंकर काका अपन वीणकेँ वाणीपर चढ़बैसँ पहिने अपन बेनु बनक तार जोड़ि लेला।

जखने बेनु बनक वीणाक तार शंकर कक्काक वाणीसँ जुड़ए लगलैन कि हिया हारि मन गबाही देलकैन जे यएह समाज छी, जइमे एक-एक पुरुख दोहरी-तेहरीक कोन बात जे दर्जनक दर्जन, सोरेक-सोरे बिआहो करै छैथ आ बिनु बिआहोक नारीक संग अपन भोग-पिपाशु मनकेँ तृप्ति सेहो करै छैथ आ सोरैहिया जीव जकाँ धियो-पुतो जनमैबते छैथ। मुदा तहीठाम नारीक लेल एहेन छूट अछि? नहि! हुनका संग प्रतिबन्ध लगल छैन! तेतबे नहि, जँ पुरुख (पति) झगड़ा-झंझट केने संग छोड़ि दैन आकि अपने कोनो कारणे मरि गेला तँ ओ दोसर पुरुखक संगो नहि पकैड़ सकै छैथ! मुदा लगले शंकर कक्काक मनक कोढ़ी ओहिना फुटि गेलैन जहिना फूलक कोढ़ी अपन मुँह फोड़ि रंग-रंगक फूल प्रदर्शित करैए। मनमे उठलैन- एहनो प्रथा तँ किछु परिवारे विशेषक अछि, सौंसे समाजमे–माने समाजक सभ परिवारमे–नहि अछि। अपन चारू कातक घेराएल बाट देख शंकर काका बजला-

“अच्छा, ई कहू जे एहेन प्रश्न मनमे किए उठल जे दुनू प्राणी सभ दिन एक सिरहन्ने..?”

पर्वत सदृश्य अपन नारीत्वक प्रश्न उठा शंकर कक्काक दिशाक

बाटपर रखैत पवित्री काकी बजली-

“जँ पुरुख बिनु नारीक असगरो दुनियाँमे जीब सकत आ अपन अस्तित्व रखि सकत, जे कि अपन पुरुषत्वक विचार कबुलने अछिए, तैठाम पुरुख अपने किए ने पत्नीक मृत्युक पछाइत ओहन व्रत अपनो-ले बना निमाहि रहल अछि?”

पवित्री काकीक सुबुद्ध मनक सुशील विचार सुनिते शंकर काकाकेँ पत्नियेक विचारमे नुकाएल एकटा गर भेटलैन। गर ई भेटलैन जे पुरुषोमे एहेन पुरुषवान पुरुष नइ भेला आकि नहियेँ छैथ सेहो केना मानि लेबैन। एहनो-एहनो वीर पुंगव पुरुष भेबे कएल छैथ, अखनो अनेकानेक छथिए जे अपनाकेँ ओही दिशामे बढ़ैबतो जाइये रहला अछि। एक-सँ-एक एहेन वीर पुंगव पुरुखक प्राचीन धारा बहिये रहल अछि आ अनवरत बहितो रहबे करत। तखन तँ ईहो नहियेँ नकारल जा सकैए जे समुद्र रूपी समाजमे सेहो ओहिना लहरियो उठैए आ ज्वारो उठिते अछि, जइसँ पुरान डेंगी नाह सेहो डगमगेबे करैए। ‘गहरी नदिया नाव पुरानी...!’ तँए ओइ नाहकेँ समुद्र रूपी समाजक एक किनारसँ दोसर किनार पहुँचैक शक्ति नइ अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...।

विचारक दौड़मे शंकर काका मने-मन दहा-भँसिया रहल छला, जइसँ जहिना कोनो तेज हवा वा विर्रोमे धरतीक कोनो खढ़-पात–जीअल वा मुइल–धरतीसँ उड़ि अकास छुबि लइए आ जेना-जेना हवा आकि विर्रो कमैत जाइए तेना-तेना धरतीपर पुन: आबि जाइए तहिना शंकरो काकाकेँ भेलैन। धरतीपर विचारकेँ अबैत देख शंकर कक्काक मन ओहिना पसिझए लगलैन जहिना रौदमे वा आगिक तावमे पात सीझि कऽ पसिझए लगैए। पसिझैत शंकर काका बजला-

“लऽ दऽ कऽ दू प्राणी भेलौं, तखन एते चिन्ते किए मनमे रोपल अछि, जे एना हएत तँ ई दुख हएत, ओना हएत तँ उ दुख हएत आकि

सुखे हएत! तइले मन किए डराइए? जखन दुनू प्राणी मनुखेक वंशक छी तखन किए कोनो चिन्ता करै छी। जँ मनुख वंशसँ देववंशमे नहि पहुँचब तँ जानवरे वंशमे किए जाएब।"

ओना शंकर काका अपना जनैत पवित्री काकीक मनकेँ भरल कोठीक चाउरकेँ निकालि जहिना गृहिणी रौदमे सुखबै-फटकैकाल हाथसँ तर-ऊपर करै छैथ तहिना सेहो करए चाहलैन मुदा पवित्री काकीक कड़ुआएल मन एकाएक शान्त नइ भेलैन। ओना, किछु मद्धिम जरूर भेलैन। बजली-

"पैछला जिनगी ने गपे-सप्पमे कटि गेल, मुदा ऐगला तँ भारी अछिए?"

ओना अपना जनैत पवित्री काकी ठिकिया कऽ प्रश्न रूपी ढेप गाछक पाकल आमपर फेकने छेली। जे शंकर काका अपन मन रूपी फलमे लगैसँ पहिनहि बुझि गेल छला। बजला-

"जहिना एक-एक दिनक घटबीसँ जिनगीमे घटैत-घटैत एतए तक पहुँच गेलौं तहिना ऐगला जिनगीक ऐगला एक-एक दिनकेँ घटबैढ़ करैत अहिना नीक जकाँ ऐगलो गमा लेब। तइले अनेरे जे एते चिन्ता-फिकिर मनकेँ दबने अछि सएह भेल नारीक नरिपन। यएह जखन पुरुखपन बनए लगैए तखन हमर-अहाँक बीच भेँट कमैए। देखै छिऐ! शीतलहरीक कूहि फटल जाइए, तँए ठंढमे दबल अकराएल देहक शक्तिकेँ बिनु रौदमे पकौने केना अंकरा छोड़ाएब।"

ओना बजैक क्रममे शंकर काका अपन मनक बात उगललैन, मुदा मनक बात उगलला पछाइत जखन पेट खलिया गेलैन तखन पवित्री काकीक विचार नव शिरासँ पेटमे औंकुरा दिअ लगलैन।

पत्नीक औंकुराइत विचार देख शंकर कक्काक मनमे उठलैन- पत्नीक विचारकेँ जँ निरुत्तर करि मन सोल्होअना हल्लुक नहि कऽ देबैन तँ हुनका

मन-रोग भऽ जेतैन। तँए जेतेक शास्त्र-पुरानसँ लऽ कऽ घर-अँगनाक विचार अछि ओ अपना ढंगे करबे नीक।

ऐठाम दूटा विचार शंकर कक्काक मनकेँ घेरि लेलकैन। पहिल अपन परिवारक पत्नीक विचार आ दोसर समाजमे पसरल विचार। समाजमे छोट-छोट जनसमूह बनि छोट-मोट काजक दौड़ शुरू कऽ रहल अछि, मुदा काजक स्तर–आमदनीक हिसाबसँ–अपन जीवन स्तरसँ केतेक दूर अछि आ केतेक लग अछि से तँ अपने ने विचारए पड़त। एहेन तँ नहि जे अपन मोबाइलोक रिचार्ज आ सरफो-साबुन उधारीए चलबए पड़त।

समाज दिससँ मन ससैर शंकर कक्काक मन पवित्री काकी दिस बढ़लैन। आँखि उठा जखन पवित्री काकीपर देलखिन तँ बुझि पड़लैन जे लाखो घैल पानि आँखिमे डबकल छैन। तँए जाबे अपन मनक भड़ाँस पत्नी अपने मुहेँ नइ उगलती ताबे ओकर रस्ते की खोजल जाएत। मुस्की दैत शंकर काका बजला-

“ऐगला दिन जे भारी बुझि पड़ैए, से किए? ने हमरे डायबिटीज-बल्डप्रेशर अछि आ ने अहींकेँ अछि तखन भारी किए बुझि पड़ैए जे चिन्तासँ घेराएल छी?”

शंकर कक्काक मुँहक ‘चिन्ता’ सुनि पवित्री काकीक मनमे निश्चिन्तता उठए लगलैन, निश्चिन्त होइत बजली-

“अहाँ अछैत जँ हमरा चिन्ता हुअए, यएह ने भेल हमर नदानी।”

नहलापर दहला आ बीबीपर बादशाह फेकैत शंकर काका बजला-

“अही नदानीक चलैत ने हमरो हाथ पकड़लौं आ हमहूँ हाथ पकैड़ कऽ अपना घर अनलौं। यएह घर ने गृहो बनत, निकेतनो बनत आ समय पेब भवनो बनत, सदनो बनत। तहिना जखन मौसमक संग समय पकड़त तखन धामक संग मन्दिरो बनबे करत।”

पतिक विचारमे अपन सहमत जतबैत पवित्री काकी बजली-

"जीते जिनगी ने कियो किछु पेबो करैए आ लूटेबो करैए।"

❑ साभार : दोहरी हाक

धोरवा

पच्छिम दिस सुर्ज लटैक गेला मुदा डुमल नइ छला। ओना, सुर्जक डुम्बोक बेर सभ मास आ सभ मौसममे अलग-अलग होइए। कोनो मासमे डुमैसँ पहिने थरथरी-कँपकपी अपनो आबि जाइ छैन आ लोकोकेँ ऐबते छइ। मुदा एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे सभ दिन आ सभ मास आकि सभ मौसममे अहिना होइए। एहनो तँ समय आकि मौसम ऐछे जइमे डुमैयोकाल ओहन उष्मा आकि प्रखरता रहिते छैन जेहेन बालपन-सँ-जुआनपन धरि रहलैन...।..से नइ, शरदक मास रहने सुर्जमे केतौ ने वादल घोंसियाएल आ ने रंग-रूपमे कोनो कमी आएल। मुदा तँए कि ओसक आगमन आकि जाड़क आगमन नइ भेल सहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

दिन अछैते बाध दिससँ आएले रही कि मनीष भाय पहुँचला।

पत्नी चाह नेने आबि गेल रहैथ मुदा एके कप चाह, पत्नीक हाथसँ कप लैत मनीष भाइक हाथमे पकड़बैत पत्नीकेँ कहलयैन-

“आरो एक कप चाह नेने आउ।”

पत्नी चाह आनए आँगन गेली, मुदा मनीष भाय हाथमे कप रखने ने किछु बाजैथ आ ने चाह मुँहमे लगबैथ। जे सोभाविको अछि। गाम-

घरमे लोकक चूल्हिपर चाहे केते बनैए। कोलकाताक ग्रेण्ड होटल नइ ने छिऐ जे सदिखन खदकैते रहैए। मुदा सम्बन्धो तँ कपे भरिमे ने निमाहऽ पड़ै छैन...। दोसर कपमे चाह नेने पत्नी पहुँचली। हाथमे चाह लैत मनीष भायकेँ कहलयैन-

"किए चाह बागने छी, हमरो तँ आबिये गेल।"

पत्नी चोटे घूमि आँगन चलि गेली। एक घोंट चाह पीब मनीष भाय कहलैन-

"श्याम, गुरु काका ऐठाम चलह।"

मनीष भाय खोलबे ने केलैन जे कोन काजे आकि किए चलह। ओना, मनीष भायपर सभसँ बेसी बिसवास- गामक लोकक अपेक्षा- अछि। एहेन लोक जँ बारह बजे दिन आकि बारह बजे रातियो जँ केतौ चलैले कहता तँ मिसियो भरि अन्देशा नै हएत। तहूमे गुरु काका ऐठामक बात छी। मुदा समैयोक तँ अपन गतिविधि छइ। एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे कोनो बहन्ने लोक लोककेँ ठकि पैघ-पैघ अपराधमे ओझरा दइ छै...।

सामंजस्य करैत मनीष भायकेँ कहलयैन-

"अहूँ बड़ औगताह छी, पहिने चाह पीबू तखन पान खाएब, पछाइत जेतए जाइक मन हएत तेतए चलब।"

दुनू गोरे चाह पीलौं। पान खेलौं। नवका डिब्बाक पान साए नम्बर जरदा-पत्ती, मुँहमे दइते पानकेँ फुला देलक। मुँहक पान फुलाइते मनो फुला गेल। फुलल मने मनीष भाय बजला-

"गुरु काका अखन कष्टमे पड़ि गेल छैथ।"

पनरह दिनसँ ओम्हर नइ गेल रही तँए गुरु काकासँ भेँट नइ भेल छल। कष्ट सुनि मन हहैर-हहैर खसऽ लगल। मुदा सम्हैरैत पुछलयैन-

"केहेन कष्टमे पड़ि गेल छैथ?"

ओना, मनीषो भाय झँपले-तोपल बजला। किएक तँ कष्टो तँ केते रंगक अछि, एहनो कष्ट तँ ऐछे जे खेबाकाल जँ तरकारी अनोन कि मधनोन रहल, तहूसँ कष्ट होइए। जखन कि केते लोक एहनो तँ छैथे जे नोन खाइते ने छैथ।

कुरसीपर सँ उठैत मनीष भाय बजला-

"चलह रस्ते-रस्ते गपो करैत चलब आ भेँटो कऽ लेबैन।"

दुनू गोरे गप-सप्प करैत गुरु काका ऐठाम पहुँचलौं।

ओछाइनपर पड़ल गुरुआइन काकी चद्दैर ओढ़ने रहैथ आ गुरु काका सिरमा लग बैसल रहथिन। हमरा दुनू गोरेकेँ देखते गुरु काका सोर पाड़ैत कहलैन-

"एम्हरे आबह।"

लगमे पहुँचते काकीकेँ कहलयैन-

"काकी, गोड़ लगै छी।"

गोड़ लगाब सुनि गुरुआइन काकी चद्दैर समेट ओढ़ि बैसैत असीरवाद दैत बजली-

"भगवान हमरो ओरुदा तोरे देथुन जइसँ दनदनाइत चलैत रहबह।"

मनमे भेल जे आब हिनका औरुदे केते छैन जे अखनो बाँटि रहली अछि। मुदा लगले धक् दऽ मन पड़ल जे आइए नइ सभ दिने एहने असिरवाद गुरुआइन काकी दैत एली अछि। दुनू गोरे- माने हमहूँ आ मनीषो भाय- बैसलौं। बैसते गुरु काकाकेँ मनीष भाय पुछलखिन-

"काका, केहेन समय-साल अछि?"

गुरु काका मनीष भाइक मुँह दिस देखैत कहलखिन-

“की समय-साल रहत...!

पत्नी दिस आँखि घुमबैत-

..देखहुन ने, कहै छैथ जे हमरा कोनो दवाइ-बीड़ो नइ करू। अहाँ अछैत जँ मरि जाएब तखन ने अहाँक मन निसकलुष रहत, जइसँ साए बरख नहियोँ पुरने शतीक पात्र हएब।”

गुरु कक्काक बात मनीष भाइक मनमे धुरियाए लगलैन, मुदा हमरा हँसी लगि गेल। कहू जे आन बुढ़ानुसकेँ मरैक डर होइ छै, जइसँ पतियो आ बेटो-पुतोहुकेँ गरियबैत रहै छैथ जे दवाइ-वीड़ो छोड़ि सभ गरगोटिया दऽ कऽ मारऽ चाहैए आ ऐठाम उनटे देखै छी! मुदा हँसी कम करैत मुस्की भरैत रही, बाजी किछु ने।

ओना, मनीष भायकेँ देखिऐन जे करवनो मुँह विदैक जाइ छैन आ करवनो सोझ-साझ भऽ जाइ छैन। मुदा हमरा केटली आ कि कोनो बरतनमे खौलैत पानि जकाँ जे ऊपरका उधियाइत रहैए मुदा निचला जरैत ऊपरकाक दाबसँ तेते दबल रहैए जे सगबगाइयो ने पबैए, तहिना कण्ठसँ ऊपर तेते खुशी नचैत रहए जे हृदयक बातकेँ दाबि देने रहए। हुअए जे भैरसक हमरे सन लोक-ले ने लोक बजैए ‘केदैन हँसल किदैन देख...।’

मुदा फेर मन कहलक होशियार लग बैसब वएह होशियारी भेल जे सुनि-सुनि बुझैक परियास करी। एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि आ दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल, तैठाम देखनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बैने जाइ छै, तँए रही तँ चुपचाप बैसल मुदा मकैक लाबा जकाँ करवनो-करवनो मन फुटि-फुटि लाबा बनि खापैड़सँ उड़िये जाइत रहए। जे निच्चाँ खसि पड़ै तेकरा उठाएबो तँ कठिन अछिए। एक दिस अपने गरम रहने आँगुर पकैक डर रहैए तँ दोसर दिस लगले सरेने जाबे घानी-बनत ताबे ओ गरमेबे करत...।

हमरा दुनू गोरेकेँ सोझहामे देख गुरुआइन काकीक नरसिंह जगि गेलैन। तहूमे ओछाइनपर सँ उठि कऽ बैस गेल छेली। झपटैत गुरु काकाकेँ झपैट बजली-

“आइए नै सभ दिनसँ पुरुख नारीपर अनबिसवास करैत आएल अछि आ अखनो करैए।”

गुरुआइन काकीक असल बात पेटेमे रहैन मुदा झपट्टे देख गुरु काका सहैम गेला। सहमबो केना ने करितैथ, पुरुखक पुरुखत्वक प्रश्न अछि किने। लगक संगी अपन पत्नियोँ जँ दोसर पुरुखक संग ठैठ कऽ हँसै छैथ, ऐ नारीत्वकेँ नइ मानि, शंकालु नजरिये देखै छैथ। की पुरुखक किरदानी नारी नै देख रहली अछि जे ओ सौतीनक जिनगी जीबह आ पुरुख छुट्टा खेलाइत रहह। ओना, गुरुकाका आ गुरुआइन काकीक रमझौआ नीक लगल। मुदा मन तँ गुरुआइन काकी आ गुरु कक्काक उमेर दिस देखैत रहए। ओना, अखनो दुनूक मनमे आत्म बिसवास छैन्हे जे गैल-पैच नइ मरब। मुदा झखड़ल जिनगी देख मन कलैप कऽ कलैश गेल। पुछलयैन-

“काका, केते उमेर भेल हएत?”

उमेर सुनि गुरु काका बजला-

“पनचानबे बरख चलि रहल अछि।”

‘पनचानबे’ सुनि मनमे हरियरका धुरा उड़ऽ लगल। मुदा केना पुछितिऐन जे आब केते दिन जीब। तैबीच गुरुआइनो काकीक मन लुसफुसाइत देखलयैन। बुझि पड़ल जेना किछु बजऽ चाहै छैथ। मुदा प्रतीक्षा करैत रहैथ जे हमरो पूछ हएत तखने ने...। गुरुआइन काकीक लुसफुसाइत मुँह देख पुछलयैन-

“काकी, अहाँक उमेर केते भेल हएत?”

ले बलैया! पुछलयैन असथिरसँ आ ओ बाझ जकाँ झपाटा मारि

बजली-

“स्त्रीगणक कोनो मोल छइ। दू बरख जँ पुरुखसँ बेसियो रहत तैयो दू बरख घटाइए कऽ लोक बजैए।”

दोहरा कऽ की पुछितिऐन। अपन पशे बदैल लेलौं। गुरु काकाकेँ पुछलयैन-

“काकी जँ मरऽ चाहै छैथ तँ छोड़ि दियौन।”

काकीक बात सुनि काका सहैम गेला। जेना पाछू उनैट अपन जिनगीक सर्वे करए लगला। बीचमे मनीष भाइक मुँह सेहो किछु बजैले चटपटाइत रहैन, मुदा ओ अगिया प्रश्नोत्तरक प्रतिक्षामे मुँह बन्न केने रहला। सोचैत विचारैत गुरु काका बड़ीखानपर बजला-

“बौआ, दुनू गोरे बेटे-भातीज भेलह। जइ दिन बेटा-पुतोहु परदेशक रस्ता पकैड़ कहलक जे अहूँ दुनू गोरे (माने माता-पिता) संगे चलू। मुदा गामक माटि-पानिपर कएल गेल सेवाक जे फल देखैत एलौं ओ सिनेह बेटा-पुतोहुक सिनेहसँ बेसी बुझि पड़ल। अपन जिनगीक कोनो शंके ने अछि, तखन किए केतौ जैतौं। मुदा किछु आवश्यक काज धोखा-धोखीमे छुटि गेल। ओतबे चिन्ता अछि!”

गुरु कक्काक बात सुनि मनीष भाय कहलखिन-

“काका, अखन जाए दिअ। काल्हि फेर आएब।”

गुरु काका कहलखिन-

“भरोसे-भरोसी ने दुनियाँ चलैए।”

❑ साभार : खसैत गाछ

एक मुठी घास

क्षुब्ध भऽ छगुन्तामे पड़ि गेलौं जखन नअ बर्खक भतीजी आबि कहलक-

"काका, हँसुओ आ पथियो छीनि लेलक आ गाइरो पढ़लक।"

बाध दिससँ टहैल कऽ आएले रही, एक तँ पानिक झमार दोसर भदबरिया रौद लगल रहए। मन पीताएल रहबे करए, पियास सेहो लगल रहए, रौदाएल दुआरे कलसँ कनी हटि लतामक गाछक छाहैरमे बैसल ठण्ढाइत रही जे ठण्ढेला पछाइत पानि पीब। तही बीच भतीजी आबि बाजल।

पुछलिऐ-

"के छिनलकौ?"

रेखा बाजल-

"जुगेसर काका।"

'जुगेसर' नाओं सुनि आरो चकित भऽ गेलौं। मन पड़ि गेल पहिलुका घटना। बीस बर्ख पूर्व जुगेसरक घरवालीकेँ अहिना खुरपी-पथिया मोहन बाबूक कमतिया छीनि नेने रहइ। जेकरा चलैत गारि-गरौबैलसँ लऽ कऽ मारि-पीट भऽ गेल। मारि-पीटक पछाइत मुकदमो भऽ

गेल, जइमे मुद्दालह बनि हमहूँ आठ बर्ख कोट-कचहरीक चक्कर लगौने रही। पुछलिऐ-

“की केने रही जे हँसुओ-पथिया छिनलकौ, आ गाइरो पढ़लकौ?”

सुनिते रेखा हुचैक-हुचैक कानए लगल। जहिना कोनो निरदोस फँसौल आदमी जहल जाइकाल कनैए तहिना कनैत बाजल-

“घासले गेल छेलौं, सौंसे बाधक आड़ि-धुर डुमल देखलिऐ। खाली गाछी कातक खेत सुखल देख घास कटैले बैसलौं। एके मुठी कटने रही आकि जुगेसर काका आबि कहलक जे घास किए कटै छैं?”

थोड़-थाड़ घासोक खेती गाममे हुअ लगल अछि। पुछलिऐ-

“बगहा घास छेलै आकि अनेरूआ?”

रेखा बाजल-

“अनेरूआ।”

‘अनेरूआ’ सुनि मन तरैंग गेल जे अखने जा कऽ पुछिऐ आ बलउमकी झाड़ि दिऐ। ताबे ठण्ढाइयो गेल रही, कल चला कऽ पानि पीलौं। पानि पीबिते मन आरो ठण्ढाएल। ठण्ढाइते मनमे उठल, एना जुगेसर केलक किए? आगू-पाछू उनैट-उनैट सोचलौं तँ किछु देखबे ने करिऐ। एकाएक नजैर पैछला भोंटपर गेल, शुरूहेसँ जइ पाटीमे भोंट दैत एलिऐ, तेकरे अहूबेर देलिऐ। मुदा सपनौर जकाँ जुगेसर चालि बदैल लेलक। अखन तक गमैया बात-विचारसँ लऽ कऽ पटना-दिल्लीक भोंटमे संगे रहैत आएल मुदा ऐबेर ओ ससैर कऽ दोसर पाटीमे चैल गेल।

एक तँ नहाइ बेर रहए दोसर जलखैयो ने केने रही। दू-दिसिया काज भऽ गेल रहए। दू-दिसिया ई जे नहाएब-खाएब आकि हाँसू-पथियाक बात बुझए जाएब। बर-बेमारी जकाँ हलतलबी नै बुझि पड़ल। भतीजीकेँ कहलिऐ- “बुची, अखन नहा-खा लइ छी, बेरूपहर तोहूँ चलिहेँ, जा कऽ पुछबै जे किए हाँसू-पथिया छीनलहक।”

रेखा मानि कऽ आँगन चैल गेल, मुदा मन गदमिशान करए लगल। गदमिशान ई करए लगल जे एना जे जहिना लोक रस्ताक मोड़पर आबि मोरा जाइए भरिसक तहिना जुगेसरो तँ ने भकमोड़मे फँसि, जाति-सम्प्रदाइक जालमे ओझरा एना केलक।

मन ठमैक गेल। ठमैकते कबुल लेलक जे काजक जवाब काज छिऐ, तँए ओकरो काजेसँ जवाब देब नीक हएत। जहिना हाँसू पुरान तहिना पथियो हेतै, की एक मुठी घास के प्रतिष्ठाक प्रश्न बनाएब उचित हएत? तोहूमे जैठाम जाति-मजहबक भूत मगज छुबि नेने छइ।

❑ साभार : लजबिजी

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत

गाम बिसैर गेल

ठकहरबा

समैयक बेरबादी

न्याय चाही

रिजल्ट

बाल बोध

अपन गारि अपन दुआरि

सरही सौबजा

अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध

कन्हा भँट्टा

फलहार

गावीस मोइस

निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा

मानसरोवर यात्रा

गामक शकल-सूरत

मितक प्रयोजन

चैन-बेचैन

पाइक इज्जत

माघक घूर : 1

मधुमाछी

मति-गति

नैहराक धाड़

माघक घूर : 2

चहकल विचार

राक्षसक झड़

सद्विचार

पोखरिक सैरात

मनकमना

कटौज

किछु ने

हथियाएल खुरपी

झुटका विदाइ

खुदियाएल

गलती अपने भेल

बत्तु

असिरवाद उलैट गेल

उड़हैड़

जिगेसा

लेहाज

जानक मोल

समर्पण

स्तब्ध

भोरक झगड़ा

शालीनता

पान

पवनक विवेक

हरवाहि

समरथाइक भूत

समता

सुखाएल सूरत

खजाना

मौसी

कर्ज : 2

टुटल मनक जुटान

ऐँठ साड़ी

अस्तित्वक समाप्ति

जाति नहि पानि

विदाइ

कर्तव्यपरायन सुगा

निशाँ

दान-दैछना

माइक वचन

मथाहाथ

पाइक मोल

गंजन

नमहर फेरा

अपन काज

बेटपन

उमेद

एकोटा ने

कथनी नै करनी

मुसाइ पण्डित

घरवास

भूल

बत्तीसोअना

पुरनी भौजी

अर्द्धांगिनी

खटहा आम

बुधि-बधिया

एकता

उमेरक लेहाज

केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन

धर्मक असल रूप

शिनीची सिनेह

नवान

असुध मन

महिरम

हाथक जिनगी

सिखबैक उपय

दनगर घास

ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा

जाड़ फाटि गेल

मुँहक बात मुहेँमे

कनीटा बात

गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल

इज्जत उतैर गेल

चापाकलक पाइप

घसवाहि

चटवाह

दुरकाल

गामक कटान

मेटाइत जिनगी

कपटी मित

अजाति

परदेशी बेटी

घरदेखिया

ऊँच-नीच

ऑपरेशन

फेर पुछबैन

समधीन

कनमन

नमहर घरक चोइर

पटोटन

पुरुषार्थ

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भौँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकैँ फुसलबै छी

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्गूताक मद

क्रान्तियोग

पाही पट्टी

गोहाइर

मरियाएल मन

मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी

आशापर पानि पड़ल

बुढ़िया दादी

बाबी

बुधनी दादी : 1

क्रियाशील

समझौता

रत्न गमेवाक दुख

भाइक सिनेह

हारि

जाम

विदाइ-दैछना

टाइपिस्ट

गजपट खेती

सुआद

अनेरुआ बेटा

कछमछी

समदाही

वारंट

एकाग्रचित

गलगर भैंस

प्रवल इच्छा

अधखरूआ

मोहरा

भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ

अपने केलहा

समुद्री विद्या

बीरांगना : 1

अनुशासन

बिहरन

हारि-जीत : 1

अपसोच

अपन पुरखाक डीह

खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

बेर परहक भदवा
केलवाड़ी
हँसैत लहास
बलधकेल कटौज
कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत
सनेस
छोटका काका
कुकुरपन
हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी
देखल दिन : 2
मेकचो
कामिनी
संगी

ठकुआएल भुसवा
बपौती सम्पैत
दादी-माँ
कचहरिया भाय
एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9 789388 421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452